शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सूर्यबाला की कहानियों में ग्रामीण जीवन

संगीता राणा (शोधार्थी)
हिंदी साहित्य
माता जीजाबाई शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

रचनाकार शब्दों का शिल्पी होता है। वह अपनी कलम से शब्दों को तराशते हुए कल्पना और अनुभूति की नींव पर उन्हें जमाकर अपनी रचना को सशक्त और प्रभावी बनाता है। पाठकों तक अपने कथ्य को सहजता से सम्प्रेषित कर अपनी कृति में कुछ विशिष्टता ला सकने और अपने लक्ष्य के निकट पहुंचने के प्रयास में वह नवीन से नवीनतम प्रयोग का अन्वेषण करता है। सूर्यबाला की कहानियां सामाजिक , पारिवारिक, आर्थिक परिवेश से पाठकों को रुबरु कराती है, जिसमें नारी की मुक्ति की तलाश के साथ-साथ नारी अधिकार के स्वर अपनी व्यापक परिधि में दिखाई देते हैं। इनके कहानी संग्रह में निम्न मध्यमवर्गीय ग्रामीण जीवन के साथ-साथ महानगरीय बोध की भी अभिव्यक्ति हुई है। प्रस्तुत शोध पत्र मे सूर्यबाला की कहानियों में अभिव्यक्त ग्रामीण जीवन का मूल्यांकनकिया गया है।

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

समकालीन हिन्दी कथा लेखिकाओं में एक सुप्रसिद्ध नाम है सूर्यबाला। संवेदन शील रचनाकार सूर्यबाला का जन्म 22 अक्टूबर 1944 ई.में उत्तरप्रदेश में हुआ। प्रारंभ में वे अपनी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति कविता के माध्यम से करती रहीं। सूर्यबाला ने धीरे-धीरे 1972 से साहित्य की प्रसिद्ध पत्रिका 'सारिका' एवं 'धर्मयुग' के माध्यम से कथा जगत में प्रवेश किया। अपनी कहानियों , उपन्यासों और व्यंग्य के माध्यम से उन्होंने समाज की कुरीतियों , अंधविश्वासों, परम्पराओं पर जमकर लिखा और साहित्य को समाज से जोड़ने में अहम भूमिका निभाई है। उनकी लेखनी की विविधता इन्द्रधनुष की भांति है , जिसमें सभी रंग दिखाई पड़ते हैं। एक तरफ वो सम्बन्धों की नाजुक डोर को संवेदनशील तरीके से शब्दों में बाँधती हैं तो दूसरी तरफ हास्य व्यंग्य की धार से लोगों को गुदगुदाती भी हैं। आपकी रचनाएं जीवन के सरकारों से जुड़ी है।

सूर्यबाला जी की सभी कहानियां यथार्थ की उस भावभूमि पर आधारित हैं , जो किसी वर्ग विशेष का द्वन्द्व नहीं है , बल्कि हर उस व्यक्ति का जीवन सत्य है, जो संघर्षरत है। गाँव, कस्बा नगर और महानगर में व्याप्त विसंगतियों , अंतर्विरोधों, अनभिज्ञता, विवषता और असमानता के कारण द्वन्द्व और दुविधा में उलझे व्यक्ति चरित्र से सीधा साक्षात्कार इनकी कहानियों की प्रमुख विशेषता है। सूर्यबाला जी के लगभग पैंतीस वर्ष के लेखन कार्य में ग्यारह कहानी संग्रह , पांच उपन्यास एवं तीन व्यंग्य संग्रह एवं बाल साहित्य प्रकाशित हो चुके हैं।

कहानियों में ग्रामीण जीवन

'सूर्यबाला की कहानियां सामाजिक , पारिवारिक और आर्थिक दृष्टि से पाठकों को रुबरु कराती हैं। 'सौदागर' और 'गृह प्रवेश' दोनों में ही लेखिका ने

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पारिवारिक संबंधों के घेरे से निकलकर व्यापक सामाजिक प्रश्नों को उठाया हैं। आज असुरक्षा बढ़ती जा रही है । सुरक्षित रहने के लिये असामाजिक तत्वों के साथ त्रासद समझौते जीवन का अंग बनते जा रहे हैं। व्यक्ति के पारस्परिक संबंधों की घुटन का चित्रण 'गृह प्रवेश' में किया ग्या है। कैसा गृह प्रवेष है कि ईंट चाहे पत्थरों के ढ़ाँचे के बीच भी घर की सी सुरक्षा कही नहीं है। इसी प्रकार उनमें थाली भर चाँद कहानी संग्रह में 'रहमदिल' कहानी ग्रामीण जीवन पर आधारित है। इस कहानी की कथावस्तु आसन गाँव के रेलवे स्टेशन से आरंभ होती है। इस कहानी में गाँव के सीधे-साधे रहमत और सकीना (परिवार सहित) छुट्टियाँ मनाने अपने गाँव जा रहे थे। उसी दौरान उन्हें टी.टी. द्वारा परे शान किया जाता है। उसे शारीरिक हानि भी पहुंचाई जाती है। साथ ही उसे डरा-धमकाकर पैसे भी छीन लिये जाते हैं। इसी प्रकार 'रमन की चाची' कहानी में बहुत ही सीधी-सादी रमन की चाची की करुण गाथा है। वह गाँव की सीधी-सादी महिला है। वह परिवार वालों के आये दिन ताने सुनती रहती है , लेकिन पलटकर कभी भी किसी को जवाब नहीं देती। वह रमन के चाचा की पत्नी है। उसका पति भी कभी उसका दर्द नहीं बांटता। वह तो उल्टे अपनी पत्नी को जड़बुद्धि (मूर्ख) जाहिल समझता है और कहता है कि औरतें ऐसे ही रखी जाती हैं। यहां तक कि परिवार की अन्य सभी महिलाएं भी उससे ईर्ष्या करती हैं, उसकी कोई मदद नहीं करतीं। इसी प्रकार 'राख' कहानी के माध्यम से सूर्यबाला जी ने गढ़ी (गाँव की टेकरी) के मंदिर में रहने वाले ढोंगी पाखंडी साधुओं की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है कि किस प्रकार वह श्रद्धालुओं को श्रद्धा के नाम पर लूटते हैं। उनकी श्रद्धा को ठगते हैं।

'थाली भर चाँद' कहानी उस परिवे श से संबंधित है, जो अविकसित है। एक झाड़-झंखाड़ भरे कस्बे (गाँव) में तीन नन्हीं परियाँ बड़ी सहजता से बिना किसी परे शानी के अपना काम करती हैं और दूसरी ओर सभ्य और सु शिक्षित लोग जो उन्हें देखकर अपने को अधूरा महसूस करते है। इसी प्रकार 'एक इन्द्रधनुष जुबेदा के नाम' कहानी संग्रह में भी कई कहानियों में ग्रामीण जीवन की झाँकी के दर्शन होते हैं। 'समान सतहें' कहानी में दो भिन्न स्वभाव के व्यक्ति तंगहाली और आर्थिक मजबूरियों के कारण एक ही सतह पर खड़े नजर आते हैं। इस कहानी में मंजु के चाचा-चाची और उसका पति महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मंजु के चाचा-चाची गाँव में रहते हैं। उसका पति किसी सरकारी काम से गाँव आते हैं और मंजु के कहने पर उसका पति उनसे मिलने जाता है। उनका आपसी वार्तालाप होता है। दोनों परिवारों की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। जब मंजु के पति चाचा-चाची के पैर छूने के लिये हाथ बढ़ाते हैं तो चाची द्वारा औपचारिकता स्वरुप मुड़ा-तुड़ा नोट उनके हाथ में थमा दिया जाता है। वह नोट छोटी लड़की की गुल्लक तोड़कर दिया गया था। वे घर आये मेहमानों की खातिरदारी करना उनका धर्म मानते है।
इसी प्रकार 'कहो ना' कहानी में दाम्पत्य जीवन के कुछ ऐसे अनकहे पहलू जो पति-पत्नी के निःशब्द जीवन माँ , बेटी, पत्नी के बंधनों में जकड़ी पत्नी की कहानी को दर्शाया गया है। 'कंगाल' कहानी के कथानक की शैली सहज जीवन के उन पलों को प्रदर्शित करती है, जिसमें मध्यवर्गीय संयुक्त परिवार में बेरोजगार युवक की मनोदशा व उसके द्वन्द्व का सजीव चित्रण किया गया है।

सूर्यबाला का निम्न वर्ग से सरोकार बौद्धिक नहीं , बल्कि हार्दिक है और केवल कहानी के कथ्य की तलाश में इकटठा किया गया मसाला नहीं हैं। गाँव के हालातों , व्यवहारों, कारनामों और खास गँवई गाँव की भाषा का पुट 'गोबर चाचा का किस्सा' कहानी प्रकट करती है। अपने बाप , घर, सौतेली माँ से रुठा गोबर चाचा अपने अहंकार की कुण्ठावाले जीवन को नष्ट करने का सुख (?) भोग रहा है और उसका सौतेला भाई स्थितियों से संघर्ष करता हुआ अपने कर्तव्य का पालन कर रहा है। गोबर चाचा के भगवे-वस्त्र में छिपी मनोवैज्ञानिक गाँठ, जो अहं और अपने कर्तव्य कर्म को त्यागकर भगोड़ेपन पर पल रही है, अन्त में खुलती है। इसी संदर्भ में सूर्यबाला की एक कहानी 'विजेता' भी है जो एक स्तर पर शोषित और शोषकों के सम्बन्धों की असलियत प्रकट करते हुए हम सभी मध्यमवर्गीय या उच्च मध्यमवर्गीय लोगों को अपनी आत्मा में झांकने को विवश करती है।

इसी प्रकार 'घटना' कहानी एक बहुत गरीब व तंगहाल पिता की कहानी है, जो आम आदमी की जरुरतों को चाह कर भी पूरा नहीं कर सकता। वह किसी ठेकेदार अधीनस्थ काम करता है , किन्तु बीच में ही छूट जाता है। ऐसा कई बार होता है। इसी बीच उसका छोटा बेटा बीमार हो जाता है, उसके पास बेटे की दवाई के लिये पैसे नहीं रहते है , वह काम ढूंढने के लिये घर से निकलता है, परन्तु काम नहीं मिलने पर वह पार्क में ही समय बीता कर वापस आ जाता है। वह दिन भर उनके बारे में सोचता रहता है कि उसे कहीं दूर भाग जाना चाहिये, परन्तु वह ऐसा नहीं कर पाता।

इसी प्रकार 'सिंड्रेला स्वप्न' कहानी में लेखिका ने स्त्री पर हो रहे अन्याय , जाति-पाति, छुआछूत, अंधविश्वास, पाखण्ड आदि पर तीखा प्रहार किया है। वर्तमान समस्याओं से जूझती हुई काम करने वाली लड़की की दर्द भरी व्यथा का वर्णन इस कहानी में प्रस्तुत किया गया है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि सूर्यबाला की कहानियों में ग्रामीण जीवन की विशेष झलक दिखाई देती है। वे समकालीन कथा साहित्य की जानी मानी संवेदन शील महिला कथाकार हैं। उनकी कहानियों में कस्बा , गाँव से लेकर नगर , महानगर आदि का भाव बोध होता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. *थाली भर चाँद: सूर्यबाला*
2. *दिशाहीन: सूर्यबाला*
3. *एक इन्द्रधनुष जुबेदा के नाम : सूर्यबाला*
4. *सांझवती: सूर्यबाला*
5. *गृहप्रवेश : सूर्यबाला*
6. *कात्यायनी संवाद: सूर्यबाला*
7. *शब्द शब्द मानुषगंध: सूर्यबाला*
8. *मानुषगंध: सूर्यबाला*